एम.ए ज्योतिरविज्ञान प्रश्नपत्र होरा ज्यातिष–प्रथम चतुर्थ ईकाइ

डॉ राजकुमार तिवारी एमएससी, एमए, पीएचडी,एलबी बीएड

गर्भ का क्रमिक विकासः–

निषेक या गर्भाधान के बाद गर्भ का क्रमिक विकास बताया जा रहा है। इसी के आधार पर बाद के आचार्यो ने आधानाध्याय लिखे हैं।

पहले मास में द्रव (रजोवीर्य मिश्रण) कलल अर्थात् बुलबुले के समान रूप। दूसरे मास में घनतो लिए पिण्ड अर्थात् कुछ ठोसपन प्राप्त करता हुआ आकार होता है। इसी द्वितीय मास में पुरुष, स्त्री या नपुंसक का निर्णय प्रतीत होने लगता है।

तृतीय मास में अंकुर रूप में शरीर के प्रत्यंग निकलने लगते हैं। हाथ पैर व सिर का विभाग प्रकट होने लगता है।

चौथे मास में अंगों की स्पष्टता हो जाती है। इसी मास में पुरुष भ्रूण में दोनों गुणों का मिश्रण पूर्वावस्था में संक्रमित हो जाता है । इसी मास में माता के हृदय में पैदा होने वाली इच्छाओं (दोहद) का अनुभव भ्रूण भी करता है। अतः माता की जो जो इच्छाएँ हों, उन्हें प्रयत्न पूर्वक पूरी करनी चाहिएं। यदि गर्भेच्छा पूरी न हो तो बालक पर मानसिक कुप्रभाव पड़ता है।

पाँचवें मास में भ्रूण का चित्त प्रबुद्ध होता है, तथा रक्त पुष्ट होने लगता है। छठे मास में हड्डी, स्नायु, नख व बाल, रोम आदि प्रकट होने लगते हैं। सातवें मास में बल, रंगत बढ़ती है तथा सारे अंग पूर्ण बन जाते हैं। इसी मास में अपने हाथों से कान व मुख को दबाकर बच्चा गर्भाशय में निवास से उद्विग्न होकर विविध यातनाओं को याद करता हुआ, लगातार बाहर निकलने के लि उपाय खोजता है।

आठवें मास में त्वचवा, कान, शरीर का ओज, हृदय की समुचित मात्रा में चेतनता, शुदृध रक्त आदि सम्पूर्ण होकर पूरा शिशु हो जाता है। इस महीने में बच्चा बहुत चंचलता दिखाता है। यदि आठवें मास में प्रसव हो जाए तो यह शुभ नहीं है। तब बालक के जीवन की सम्भावनाएँ क्षीण होता है।

अतः समुचित प्रसव समय 9–10 मास में अर्थात् नवें मास से आगे होना ही है।

विशेष व्युत्पत्ति के लिए हमारा वृहज्जातक अभिनव भाष्य का आधानाध्याय व वृद्ध यवन जातक का सम्बद्ध भाग देखें । इन्हीं मूल श्लोकों को आचार्यों ने अपनी मेघा व अनुभव के द्वारा वैज्ञानिक विवेचन का आधार बनाया है।